Updeshmala

Folder No.	022274
Granth Name	Updeshmala
Author	Kirtiyashsuri
Publisher	Sanmarg Prakashan
Edition	1
Year	2013
Pages	564

उपदेशमाला

फोल्डर नं.	०२२२७४
ग्रन्थ	उपदेशमाला
लेखक	कीर्तियशसूरि
प्रकाशक	सन्मार्ग प्रकाशन
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	२०१३
पृष्ठ	५६४

मुख्य टाइटल
शासनशिरताज, दीक्षायुगप्रवर्तकश्रीजीना श्री चरणे आदरभरी अंजलि ---------- ३
समर्पणम् ---------- ५
प्रकाशकीय ---------- ६
संपादकीय ---------- ७
कर्णिकावृत्तिसमन्विताया उपदेशमालाया भूमिका ---------- १४
उपदेशमाला कर्णिकावृत्तिसंपादन संशोधननी वेळाए यत्किंचित् ---------- १९
संपादन-संशोधन कार्य माटे उपयोगमां लीधेल हस्तप्रतोनो परिचय ---------- २३
विषयानुक्रमणिका ---------- ३५
प्रथम परिवेष ---------- १
मङ्गलादिचतुष्टयसूचनम् ---------- १
गुरुगुणमार्गणायां हेतु ---------- १२
जीव एव स्वहितकर्त्ता भावानुसारेण कर्मबन्ध ---------- २३
कषायजयो गुणाय ---------- ३५
संसारिजीवस्य नटसद्दृशत्वे कुलाभिमान कुतः ---------- ४५
परिग्रहस्य सापायत्वे नैर्ग्रन्थ्यमेव श्रेयस्करम् ---------- ५०
द्वितीय परिवेष ---------- ५३
अभ्यन्तरग्रन्थकुलाभइमानत्यागे नन्दिषेण कथा ---------- ५३
गुणेषु मत्सरिणां निर्विवेकतादोषः तद्विषये पीठमहापीठर्षिकथा ---------- ६६
बालतपस्विनां तपसोल्पफलत्वे तामलितापसकथा ---------- ८२
कारणादपवादसेविगुरुपरिभवदोषेदत्तकथा ---------- ९९
निष्कारणनित्यवासे दोषा ---------- १११
प्रमादेषु दुरन्तौ रागद्वेषौ प्रथमं जेयौ तयोर्दोषा दुरन्तता च ---------- १२४
तत्र मातृद्वारे चुलनीकथा ---------- १४५

संविग्नानां सर्वापायपरिहारसामर्थ्यद्वारेण स्त्रीत्यागोपदेश ---------- १६२
पापफलम् ---------- १७७
तृतीय परिवेष ---------- १७९
मरुदेव्यालम्बने प्रमादपोषकाणां निराकरणप्रमादोपदेशश्च तत्र प्रत्येकबुद्धकरकण्डवादिकथा ---------- १७९
आत्मशिक्षणम् ---------- १९२
उत्सूत्राचारवतां संसर्गोऽपि न कार्य तस्य दोषादि तत्र गिरिशउकपुष्पशुककथा ---------- २२२
श्रावकगुणा ---------- २४३
दुर्गतिहेतुभूता चेष्टा ---------- २६२
संसारिणां दासतुल्यत्वम् ---------- २८८
कषायद्वारे क्रोधादिपर्यायस्वरूपदोषआ ---------- ३०१
गौरवद्वारे ऋद्ध्यादिलिङ्गस्वरूपम् ---------- ३२३
विनयद्वारे तत्प्राधान्यं गुणाश्च ---------- ३४१
सुसाधो अवसन्नान् प्रति औचित्यं यतना च ---------- ३५१
कारणे अपवादसेवने न दोष ---------- ३८३
शुद्धधर्मस्वरूपम् ---------- ३९३
ज्ञानार्थिनां गुरुराराधनीय अन्यथा दोष ---------- ४१९
हतबोधेर्भवभ्रमणम् इहलोके च स्वपरापकारित्वम् ---------- ४३३
अर्हन्तो हितोपदेशदातार न ते बलात् कारयन्ति निवारयन्ति वा ---------- ४४८
क्लिष्टपरिणामस्य सततं कर्मबन्ध तस्य च सुखभ्रान्त्या अरतिविनोदनमेव ---------- ४६०
सुचरितानुष्ठातुर्नशोक ---------- ४७०
गुरुकर्मणो विपरीतचरिता ---------- ४८७
उभयभ्रष्टस्य मिथ्यात्वसंभावना ---------- ५०३
सम्यग्ज्ञानादिविकलेन लिङ्गमात्रेण न किञ्चित् त्राणण् ---------- ५२१
ग्रन्थाध्ययनाधिकारिण ---------- ५३९
ग्रन्थोपसंहारः... ---------- ५४०
परिशिष्ट ---------- ४८३
उपदेशमालायां मूलगाथानामकाराद्यनुक्रम ---------- ४८३
उपदेशमालाकर्णिकावृत्तौ उद्धरणानामकाराद्यनुक्रम ---------- ४९१
उपदेशमालाकर्णिकावृत्तौ कतिपयसूक्तिनामकाराद्यनुक्रम ---------- ४९४
उपदेशमालाकर्णिकावृत्तौ कथानकानामनुक्रम ---------- ४९६
उपदेशमालाकर्णिकावृत्तौ विशेषनाम्नामकाराद्यनुक्रम ---------- ४९९
उपदेशमालाटीकादिसाहित्यसूची ---------- ५१९